School of Social Science

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "जनपद कानपुर नगर के जलीय पर्यावरण पर चमड़ा उद्योग के प्रभाव का एक भौगोलिक अध्ययन"("Janpad Kanpur Nagar Ke Jaliy Paryavaran Par Chamada Udyog Ke Prabhaav Ka Ek Bhaugolik Adhyayan") being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Geography under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of **Prof. Sanjay kumar singh** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Mukesh Dubey
Enrollment No. : 2201402

Supervisor
Prof. Sanjay Kumar Singh
(Geography, SOSS)

Prof. Santosha Kumar
(Director of. SOSS)

Prof. P. K. Pandey
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

"जनपद कानपुर नगर के जलीय पर्यावरण पर चमड़ा उद्योग के प्रभाव का एक भौगोलिक अध्ययन"

"Janpad Kanpur Nagar Ke Jaliy Paryavaran Par Chamada Udyog Ke Prabhaav Ka Ek Bhaugolik Adhyayan"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN **GEOGRAPHY**

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

MUKESH DUBEY

Enrollment No. : 2201402

Under the Supervision of

Prof. Sanjay Kumar Singh

Faculty of **GEOGRAPHY**

School of Social Science

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

1.संक्षेप–

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र कानपुर नगर के जलीय पर्यावरण पर चमड़ा उद्योग के प्रभावों का सूक्ष्मवलोकन कर मानव स्वास्थ्य व पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने के उपायो के मार्ग प्रशस्त करना है। जिससे हम मानवीय जीवन, जल, पर्यावरण व जलीय जीवों एवं अन्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र में चमड़ा उद्योग के संकेद्रण के कारणों का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि को विश्लेषित करते हुए उनका भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान व क्षेत्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन करते हुए, हम चमड़ा उद्योग का पादपों पर, मानव पर, जीवों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करेंगे ।

अतः अध्ययन क्षेत्र के अध्ययनोपरांत हमें जलीय पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को जानने समझने का मौका मिलेगा। जिससे चमड़ा उद्योग के मानव स्वास्थ्य, जलीय पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी घटकों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को कम करने के मार्ग सृजन करने का प्रयास किए जाएंगे।

KEYWORD - जलीय पर्यावरण, व्यापार, जैव अपघटनीय, बीओडी, टैनिंग, टीडीएस

CONTENTS

S. No. Description	Page No.
1.Introduction	6
2. Literature Review	6-9
3. Description Broad Area	10-12
4. Objectives of the Study	12
5. Research Methodology	12-13
6. Expected Outcome of the Research	13
References	13-15
Plagiarism Report	

1. प्रस्तावना–

चमड़ा उद्योग वैश्विक व्यापार में जहां एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, यह वस्तुओ जैसे जूता, बेल्ट, पर्स, सीटकवर, बुलेट प्रूफ जैकेट आदि उपयोगी सामानों की पूर्ति करता है वहीं इसके बनने की सर्वाधिक कीमत जलीय पर्यावरण को चुकानी पड़ती है। इस उद्योग को उत्तर भारतीय राज्यों में सर्वाधिक प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर को मिली है जिसके कारण यह औद्योगिक क्षेत्र अपने जलीय प्रदूषण के कारण अध्ययन हेतु प्रासंगिक क्षेत्र बन गया है।

कानपुर नगर क्षेत्र को संपूर्ण भारत के उत्तर पूर्व का मैनचेस्टर के रूप में प्रसिद्धी मिली है जो इसे क्षेत्र के समृद्ध औद्योगिक संपन्न होने का दावा करता है। जिसमें प्रमुख रूप से चमड़ा उद्योग महत्वपूर्ण स्थान रखता है कानपुर क्षेत्र में विभिन्न औद्योगिक इकाइयों के माध्यम से चमड़े के उत्पादन व निर्यात के केंद्र बिंदु के रूप में इस क्षेत्र की वैश्विक पहचान मिली किंतु इस पहचान से जहां आर्थिक समृद्धि मिली है वहीं भयंकर रूप से जलीय पर्यावरणीय समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है। चमड़ा उत्पादन प्रक्रिया में भिगोना, टैनिंग, रंगाई, फिनिशिंग व छटाई समेत कई चरण होते हैं। जिसमें अत्यधिक मात्रा में जल का उपयोग किया जाता है। जिससे अधिक मात्रा में प्रदूषित जल व प्रदूषक निकलते हैं। इसमें कुछ जैव अपघटनीय होते हैं व कुछ हानिकारक रसायन भी निकलते हैं। कभी–कभी यह जल अनुपचारित नदियों, नालों व भूमिगत जल स्रोतो में छोड़ दिए जाते हैं, जिससे जलीय पर्यावरण में ह्रास और स्वास्थ्य जोखिम बढ़ गया है।

कानपुर नगर में जलीय पर्यावरण पर चमड़ा उद्योग का प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं पानी की गुणवत्ता ह्रास, बीओडी, सीओडी, टीडीएस और अन्य भारी धातुओं की मात्रा में वृद्धि आदि जलीय परिस्थितकी तंत्र जो जीवो व वनस्पतियों की प्रचुरता से परिपूर्ण थे। अब चमड़ा उद्योग द्वारा छोड़े गए प्रदूषकों के कारण यह जलीय जीव अपने जीवन हेतु संघर्षरत है।

इस प्रकार कानपुर नगर के गंभीर जलीय पर्यावरण के चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र के व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है ऐसे में यह प्रयास न केवल जलीय पर्यावरण प्रदूषण के स्रोतों के बारे में जानकारी देगा बल्कि जलीय पर्यावरण को कम करने, सरकारी योजनाओं के समुचित उपयोग और सतत विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साक्ष्य आधारित नीतियों के मार्ग प्रशस्त होंगे।

M Dubey

2. पूर्व साहित्य का पुनरावलोकन–

विभिन्न क्षेत्रों में मानव के द्वारा किए गए चमड़ा उद्योग से जलीय पर्यावरण पर पड रहे प्रभाव का पूर्व में किए गए अध्ययनों व साहित्यों का विवेचना किया जा रहा हैं–

- पापालिमेयू, एफ एथेंस(1995), ने जल संसाधन व प्रबंधन ग्रामीण विकास संरक्षण से संबंधित कानून में जल संसाधन को पर्यावरणीय हिस्सा होने के कारण इसे मुख्यतः दो समस्याएं प्रबंधन व कमी को बताया तथा इनका नियोजित प्रबंधन उपयुक्त बताया।
- अय्यर विजय, गुरुमूर्ति(2006), ने अपने लेख असुरक्षित क्रोमियम चमड़े से प्रदूषण भार का आकलन नामक शोध पत्र में बताया कि लगभग 80: चमड़ा टैनरियों ने गंभीर जल प्रदूषण का कारण बना है। इसने नदी निकायों को प्रदूषित किया है। इसने पूरे भारत में व्यापक रूप से फैले विषाक्त हेक्सावेलेंट क्रोमियम के साथ भूजल संदूषण का कारण बना है।
- एन. निथ्या और जोसेफ, कुरियन(2008), ने चमड़े के जीवन चक्र में सामग्री प्रवाह भारत में चमड़ा उद्योग की उत्पत्ति और विकास का श्रेय देश में मजबूत और व्यापक पशुधन आधार के साथ–साथ कम श्रम लागत और अच्छी तरह से विकसित अनुसंधान और विकास सुविधाओं को जाता है।
- एफ. जी. ओरी, एफ. यू. रहमान, वी. कटागड़े, ए. शुक्ला कानपुर(2011), भारत में टेनरियों में रासायनिक एजेंटों और एर्गोनोमिक तनावों के संपर्क का आकलन में सामान्य तौर पर, बीमहाउस श्रमिकों में रासायनिक जोखिम और त्वचीय जोखिम सबसे अधिक था।
- पाण्डे एस. के. अनुसार (2005) नगरीय पर्यावरण के अन्तर्गत नगरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया एक दूसरे से गहराई से अन्तर्सम्बन्धित है। नगरों की बढ़ती जनसंख्या, उद्योगों तथा वाहनों से उत्सर्जित सीसा, घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट नागरिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं।
- ब्तवे (2007) ने दक्षिण स्वीडन के लोगों द्वारा अपने बाह्य पर्यावरण में वांछित गुणों की तुलना अन्य देशों के नागरिकों से की। इस आधार पर उन्होंने पर्यावरणीय दशाओं के अध्ययन हेतु विकसित विधि को सार्वभौमिक रूप से उपयुक्त पाया।
- Frodeman et al(2007) के बावजूद दर्शनशास्त्र में पर्यावरणीय दर्शन का सशक्त प्रतिनिधित्व नहीं है। कुछ दार्शनिकी इसे अनुसार प्रयासों यथार्थ दर्शन नहीं मानते, क्योंकि यह अत्यधिक विषय केंद्रित (Topical) तथा सैद्धांतिक अवधारणाओं में कमजोर है। दूसरी ओर पर्यावरण विज्ञान, अभियांत्रिकी आदि में इसे अत्यधिक कल्पित तथा यथार्थ विषय से परे माना जाता है।
- Barr (2007). ने कचरा प्रबंधन कचरा न्यूनीकरण, पुनः उपयोग एवं पुनः चक्रण का परीक्षण कर विकसित किए गए संकल्पनात्मक ढांचे के अंतर्गत। यह माना कि पर्यावरणीय मूल्य स्थितिपरक विशेषताएं एवं मनोवैज्ञानिक कारक सभी मिलकर कचरा प्रबंधन हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

MDubey

- डॉ. रामकुमार गुर्जर एवं डॉ. बी. सी. जाट(2008) में द्वारा लिखित पुस्तक ज्योग्राफी ऑफ वॉटर रिसोर्सेज में जलग्रहण कार्यक्रमों द्वारा पर्यावरण प्रबंधन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।
- रामबाबू (2012) ने अपने लेख मृदा कटाव एवं कारण में बताया कि मिट्टी का कटाव और भूमि क्षरण प्रमुख पर्यावरणीय और आर्थिक समस्या है जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था के सतत विकास में बाधक है।
- के. एस. गुरूपंच, एम. एस. साहू (2014) मानव संसाधन विकास के सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, भौगोलिक एवं पर्यावरणीय आयाम में विकास और जनसंख्या वृद्धि के अंतर संबंधों की जटिलता को बताया। यदि विकास होगा तो इसका जनसंख्या पर प्रभाव पड़ता है, और यदि जनसंख्या अधिक होगी तो इसका विकास पर प्रभाव पड़ता है। यदि दोनों में संतुलित रूप से विकास हो तो पर्यावरण पर भी कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- एन० नरेन्द्रन(2014). ने अपने शोध पत्र में जल प्रदूषण के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन किया। इन्होंने आर्थिक विकास एवं पर्यावरण को एक ही सिक्का के दो पहलू माना तथा इनका मानना है कि वातावरण के उत्पत्ति प्राकृतिक प्रदत्त है, लेकिन जब से मानव औद्योगीकरण एवं उपभोक्तावादी विचारों को बल मिला जिससे प्रकृति प्रदत्त वातावरण में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न गयी है।
- ममता वर्मा, नीलम अग्रवाल (2018). सार्क देशों के मध्य महिला सशक्तिकरण पर वैश्वीकरण का प्रभावः एक तुलनात्मक अध्ययन. इन्होंने महिला सशक्तिकरण और वैश्वीकरण का तुलनात्मक अध्ययन कर बताया कि यदि पर्यावरण, संस्कृति, तकनीक, सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों के आपसी सहयोग से संतुलित विकास हों तो वैश्वीक स्तर पर पर्यावरणीय विकास को संतुलित रखा जा सकता है।
- एफएन. चौधरी और एमएफ. मलिक(2017), इन्होंने अपने शोध पत्र जलीय प्रदूषण को प्रभावित करने वाले कारकों में बताया कि जल प्रदूषण के कारकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण औद्योगिक अपशिष्ट साथ ही साथ शाकनाशी, कीटनाशी और वायुमंडलीय प्रदूषक शामिल हैं।
- डॉ. राजमणि, एस(2018), स्वच्छ उत्पादन के साथ एकीकृत व्यवहार्य पर्यावरणीय प्रौद्योगिकियाँ– वैश्विक चमड़ा क्षेत्र के लिए टिकाऊ विकल्प जैविक उपचार प्रणाली में परिवर्तित किया जा रहा है, ताकि कीचड़ उत्पादन को कम किया जा सके और उपचारित अपशिष्ट में सीओडी और स्पष्टता जैसे प्रदूषण नियंत्रण निर्वहन मापदंडों को प्राप्त किया जा सके।
- Luc Hens, Jingzheng Re(2019), पर्यावरण, विकास और स्थिरता में विकास और पर्यावरण के बीच जटिल अंतःक्रियाओं से संबंधित, इसका उद्देश्य ऐसे विकास के उद्देश्य से सभी मानवीय गतिविधियों में स्थिरता प्राप्त करने के तरीकों और साधनों की तलाश करना है।

- हटन, मैगडेलिन व मरियम शफाई(2019). इन्होंने अपने लेख में चमड़ा उद्योग द्वारा उत्पन्न जल प्रदूषण में 2025 तक दो गुणा होने का उम्मीद व्यक्त किया तथा बताया कि ऐसे में चमड़ा उद्योग से निकलने वाले अपशिष्ट व क्रोमियम युक्त जल को रिसाइकल कर बार–बार उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ानी चाहिए।
- नुदरत परवीन (2019). जनसंख्या तथा आर्थिक विकास के निर्धारक तत्वः एक अध्ययन इन्होंने जनसंख्या व आर्थिक विकास का सीधा संबंध बताया। तथा देश की सरकारों व संस्थाओं को अपनी जनसंख्या के कार्यकुशलता व तकनीकी शिक्षा प्रदान कर आर्थिक रूप में परिवर्तित कर उनसे अधिकतम आय व विकास प्राप्त किया जा सकता है।
- सोनम चैरसिया, दीप्ति सुनेजा.(2019). ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका इन्होंने समकालीन विश्व में संचार के माध्यमो में हो रहे निरंतर परिवर्तन एवं जनसंचार के सूक्ष्मतम भूमिकाओं का अध्ययन कर। इसके पर्यावरण पर प्रभाव, ई कचरा, ई वेस्ट आदि का अध्ययन करते हुए यह बताया कि कृषि पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक क्रियाओं का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अध्ययन स्पष्ट रूप से देखा जाता है।
- विलियम, ए समल व एडवर्ड, अहमद एमपी परवेज(2020). ने अपने शोध पत्र वेल्लोर जिले के विशेष संदर्भ में तमिलनाडु में भूजल पर चमड़ा उद्योग को प्रभाव में इन्होंने बताया कि कारखाने से निकलने वाले अपशिष्ट जल में घुले खतरनाक रसायनों के शोधन उपरांत ही प्रवाहित किया जाए।
- Dr- V- C- Sinha, Ritika(2020). यावसायिक पर्यावरण Business Environment- इन्होंने व्यापार के क्षेत्र में विभिन्न समस्याओं जैसे पोर्ट, आयात, निर्यात, सामाजिक, आर्थिक कारक, लोगों की आवश्यकता, गरीबी आदि। विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करते हुए, इस बात पर विशेष बल दिया कि विदेशी व्यापार देश की स्थिति और मांग से ही निर्धारित होती है।
- अग्रवाल, वी., सिंह, के., और राघव, एस. (2020) "कानपुर के चमड़ा उद्योग में प्रदूषण नियंत्रण में हालिया विकास" शोधपत्र में प्रदूषण नियंत्रण प्रथाओं में कुछ सुधारों को नोट किया गया है, लेकिन इस बात पर जोर दिया गया है कि क्षेत्र के जल संसाधनों को और अधिक गिरावट से बचाने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।
- मुथुकृष्णन, लक्ष्मीपति(2021), स्वच्छ चमड़े के उत्पादन के लिए नैनो प्रौद्योगिकीरू एक समीक्षा इन मुद्दों को नैनोटेक्नोलॉजी द्वारा नवीन उत्पादों को जोड़ने और टेनरी अपशिष्टों का उपचार करने के लिए आंशिक रूप से हल के बारे में बताया है।
- हेसन, एवर्टन(2021). इन्होंने अपने शोध पत्र चमड़े की टैनिंग के बाद की प्रक्रिया में जल में रसायनों और अपशिष्टों का पर्यावरणीय मूल्यांकन में बताया कि टेनरियों से निकलने वाले तरल अपशिष्टों का उचित शोधन व प्रबंधन उपरांत ही प्रवाहित किया जाए।

MDubey

- सिंह, अपराजिता एवं गुडी मेडा हरिप्रिया(2021). इन्होंने अपने शोध पत्र भारत में चमड़ा उद्योग के लिए जल प्रदूषको की तकनीकी दक्षता और प्रभाव मूल्य के मापन में गंगा नदी बेसिन में प्रदूषण के प्रमुख स्रोत में चमड़ा उद्योग को बताया तथा इन्होंने इसको दूर करने हेतु टेरनरी उद्योग की कंपनियों का स्वयं के वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का सुझाव दिया जिसके लिए सरकारी सहयोग को भी आवश्यकता बताया।
- Donmez, Turan & Kiliclar(2021) के अध्ययन का उद्देश्य व्यक्तियों के पारिस्थितिकीय वैश्विक दृष्टिकोण के आधार पर उनके पर्यावरण–सम्मत व्यवहार की व्याख्या करना था । उनके अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य यह जानना था कि अपने पर्यावरणीय ज्ञान की मदद से विभिन्न व्यक्ति किन उद्देश्यों की प्राप्ति करना चाहते हैं। तथा प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति अनभिज्ञ (पर्यावरण के क्षेत्र में) की तुलना में अधिक जागरूक होता है।
- रचना प्रसाद(2022). गाजियाबाद की मलिन बस्तियों में जीवन का सामाजिक आर्थिक अध्ययन में औद्योगिकरण से हो रही नगरीकरण की समस्याओं प्रवासियों के केंद्रीकरण से नगरी विकास में आने वाली बाधाओं का सुनियोजित विकास पर बल दिया है।
- कुबेर सिंह गुरूपंच(2022). पर्यावरण प्रदूषण एवं नैतिकता का भौगोलिक अध्ययन इन्होंने मानव की आवश्यकताओं एवं जनसंख्या वृद्धि के बढ़ते दबाव में संतुलन स्थापित करने की बात कही, जिससे भावी पीढ़ी के लिए संसाधनों को संरक्षित किया जा सके एवं जलीय पर्यावरण प्रदूषण में कमी किया जा सके।
- लैला, हुसैन और मोहित समद खान(जनवरी 2023). इन्होंने अपने लेख में जल फुटप्रिंट, प्रवाह विशेषताओं और प्रदूषण प्रभाव मूल्यांकन को प्रस्तुत किया।
- साहू कुमार, सुनील और गोस्वामी शुभ्रा, शंख(2023), ने अपने शोध पत्र जनरल ऑफ फ्यूचर सस्टेनेबिलिटी में सतत विकास दृष्टिकोण का उद्देश्य संतुलित और एकीकृत तरीके से वित्तीय विकास सामाजिक प्रगति व पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है।
- वैल्ली, एलेक्जेन्डर(2023), ने अपने लेख दीर्घकालिक प्रतिबद्धता में प्रदूषण और एंडोमेट्रियोसिस के बीच परस्पर क्रिया को संबोधित करने में सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों की प्रमुख भूमिका है।
- अमित्राजीत व निजकैम्प, पीटर(2023) ने जलवायु परिवर्तन और नदी जल प्रदूषणरू कानपुर में गंगा पर एक प्रयोग नामक शोधपत्र में, हमने जांच की कि जलवायु परिवर्तन की घटना ने गंगा को कैसे प्रभावित किया और इस प्रभाव ने भारत के कानपुर शहर में टेनरियों के कारण नदी में प्रदूषण को कैसे प्रभावित किया।
- सिंह, शिखा(2024), ने जल संसाधन व प्रबंधन ग्रामीण विकास के लिए नामक शोध पत्र में ग्रामीण व शहरी जल प्रदूषकों व उनके प्रबंधन के बारे में बताया है।
- कुमार, रजनीश और कुमार, मनीष(2024), ने भारत में नदी प्रदूषण नामक शोध में नदी के जल प्रदूषण के कारकों एवं उनके निगरानी तंत्र में नवीन तकनीक के उपयोग पर बल दिया।

MDubey

3. अध्ययन क्षेत्र–

जनपद कानपुर नगर उत्तर प्रदेश के लगभग मध्य में अवस्थित प्राचीन जनपदों में से एक है। जो उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 80 किलोमीटर पश्चिम में स्थित देश के औद्योगिक और आर्थिक परिदृश्य में एक अधिक अद्वितीय स्थान रखता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल के अपने समृद्ध विरासत व हलचल भरी शहरी केंद्र के रूप में विकसित हुआ। जो अपने जीवंत संस्कृति, विविध आबादी और महत्वपूर्ण औद्योगिक गतिविधियों के कारण अपनी अलग पहचान बनाई। जिसका केंद्र बिंदु चमड़ा उद्योग रहा है। जो शहरी समृद्धि का सूचक रहा है किन्तु जलीय पर्यावरण के ह्रास हेतु उत्तरदायी भी रहा है। इस शहर की स्थापना सोमवंशी राजा **'कान्हासोम'** ने की थी जिनके वंशज कान्हवंशीय कहलाए। कानपुर नगर का मूल नाम 'कान्हपुर' था। नगर की उत्पत्ति को सचेन्दी के राजा हिंदूसिंह से व महाभारत काल के वीर कर्ण से संबद्ध है।

यह क्षेत्र गंगा नदी बेसिन में अवस्थित उपजाऊ मैदान, समतल स्थलाकृति पूर्वी छोर से प्रवाहित गंगा नदी व सुविकसित यातायात क्षेत्र उद्योग वृद्धि हेतु सहायक होते हैं। चमड़ा उद्योग कानपुर नगर क्षेत्र में अत्यधिक विकसित होने के कारण इस शहर को **भारत की चमड़ा राजधानी** का उपनाम प्राप्त हुआ इस क्षेत्र के चमड़े का निर्यात से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

जनपद कानपुर नगर उत्तर प्रदेश के कानपुर मंडल में अवस्थित एक प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, औद्योगिक, व्यापारिक व परिवहन महत्व वाला जनपद है। इस जनपद का अक्षांशीय विस्तार 25°26′ उत्तर से 26°58′ उत्तर तथा देशांतरीय 79°31′पूर्व से 80°34′ पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है। कानपुर देहात के विभाजन 23 अप्रैल 1981 से पूर्व लगभग लंबाई व चौड़ाई समान थी अर्थात् 23 अप्रैल 1981 को कानपुर जिले को कानपुर नगर व कानपुर देहात नामक दो जिलों में विभक्त कर दिया गया किंतु अब यह उल्टे एल आकार में विस्तृत है। इसके पूर्व में फतेहपुर, दक्षिण में हमीरपुर, पश्चिम में जालौन व कानपुर देहात, उत्तर में कन्नोज व हरदोई तथा उत्तर पूर्व में उन्नाव से गिरा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3155 वर्ग किलोमीटर है, जो उत्तर प्रदेश के 1.29 प्रतिशत है। इस अध्ययन क्षेत्र में 4 तहसील, 10 ब्लॉक व 110 वार्ड है। कुल 46 पुलिस स्टेशन है जिसमें 39 शहरी व 7 ग्रामीण क्षेत्रों में है।

उद्योग के क्षेत्र में कानपुर नगर में कुल पंजीकृत कारखाने 1307 हैं। जबकि कार्यरत कारखाने 1178 हैं इन कारखानों में औसतन दैनिक कार्यरत एवं कर्मचारियों की संख्या 64406 है। कानपुर नगर में कुल गांव की संख्या 1003 है जिसमें 902 आवाद गांव व 101 गैर आवादी वाले गांव हैं। जिसकी कुल आबादी 4581268 हैं, जिसमें पुरुष 2459806 व महिला 2121462 है। संपूर्ण जनसंख्या की साक्षरता 79.65 प्रतिशत तथा पुरुष साक्षरता 83.62 प्रतिशत व महिला साक्षरता 75.05 प्रतिशत हैं। इस क्षेत्र का लिंगानुपात 862 हैं। जो उत्तर प्रदेश के कुल लिंगानुपात 912 से काफ़ी कम है। कुल आबादी का 34.17 प्रतिशत ग्रामीण व 65.83 प्रतिशत शहरी है।

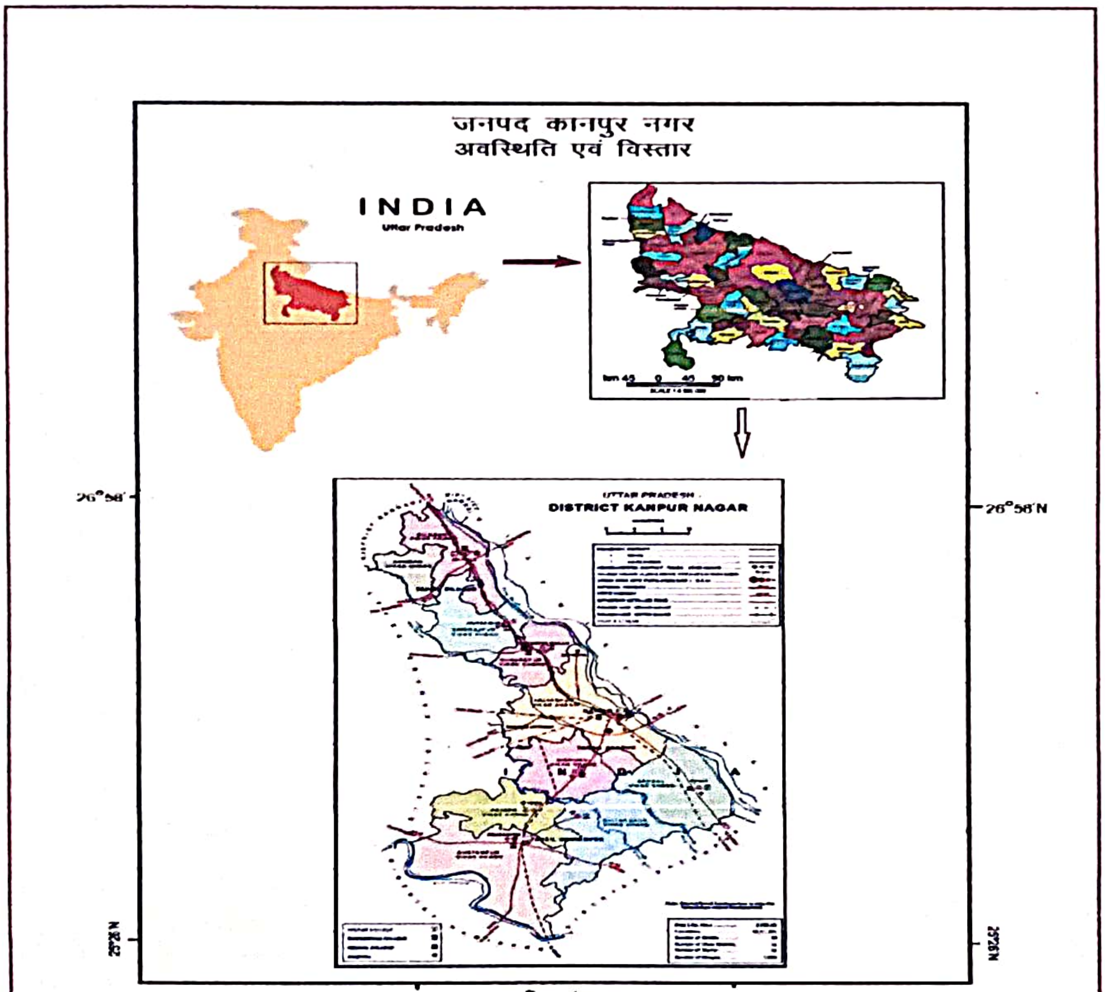

मानचित्र संख्या 1

कानपुर जिले में मुख्य नदी **गंगा, पांडू,** ईशन, रिंद, सेंगर नदी प्रवाहित होती है। इस क्षेत्र का विकास औद्योगिक नगर के रूप में हुआ है उद्योग के अपशिष्ट के नदियों में प्रवाह के कारण इन क्षेत्रों में नदियों के प्रदूषण में अधिक वृद्धि हो जाती है। औद्योगिक कंपनियों ने अपने अपशिष्ट ट्रीटमेंट प्लांट व चिमनियों के फिल्टर आदि जैसे नवीन तकनीकी के प्रयोग से धीरे–धीरे सुधार हो रहा है। यह क्षेत्र गंगा के मैदान में होने के कारण काफी उपजाऊ भी ळें

4. शोध विषय की समस्या–

प्रस्तुत शोध क्षेत्र जनपद कानपुर नगर में चमड़ा उद्योग के विकास से आर्थिक समृद्धि प्राप्त हुई है वही इसका दुष्परिणाम पर्यावरण पर भी पड़ा है चर्म उद्योग से निकलने वाले अशोधित जल सीधे नदियों, तालाबों, पोखरो, व खुले में प्रवाह अथवा जल जमाव से अनेकों प्रकार के जीवाणु जनित बीमारियों की उत्पत्ति होती है अशोधित जल के खुले प्रवाह से दुर्गंध व वायु प्रदूषण जैसी गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही है इस अशोधित जल की उचित निकासी, जल प्रबंधन की व्यवस्था के अभाव से दूषित जल नदी, तालाब, भूमिगत रिसाव धरातल पर जल जमाव से संपूर्ण जाली पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है इससे न केवल मानव बल्कि समस्त वनस्पति जात, जीव जात अर्थात पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव देखा जा रहा है।

5. विधि तन्त्र–

अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जलीय पर्यावरणीय कारकों पर भी विचार किया जाएगा जो कि जलीय पर्यावरण संरक्षण हेतु नई तकनीकी के प्रसार एवं जन उपयोगी व लोकप्रिय बनाने हेतु निम्न तकनीक का प्रयोग किया जाएगा–

- प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों को मात्रात्मक विधियों, सांख्यिकीय नियमों, माध्य, माध्यिका, बहुलक, सहसंबंध, प्रतिगमन, विचलन, प्रतिचयन आदि का प्रयोग करते हुए आंकड़ों का विश्लेषण व संवर्धन किया जाएगा।
- प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से गणितीय परिकलन के बाद यथा उपयुक्त आरेख, आलेख, मानचित्र के माध्यम से आंकड़ों को प्रदर्शित किया जाएगा।
- द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण उत्तर प्रदेश सरकार, केंद्रीय एजेंसियों व विश्वसनीय संस्थाओं के आंकड़ों को आवश्यकतानुसार गणितीय विधियों का प्रयोग कर उपयोगी बनाया जाएगा।
- मानचित्रण व कंप्यूटर का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाएगा।
- अध्ययन क्षेत्र में कुछ आधारभूत सिद्धांतों एवं प्रारंभिक सूचनाओं, व्यक्तिगत व आनुभविक सर्वेक्षणों तथा विश्वसनीय आंकड़ों का प्रयोग किया जाएगा।

➢ प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए समय–समय पर गहन क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया जाएगा।

6. अध्ययन क्षेत्र का महत्व एवं प्रासंगिकता–

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र जनपद कानपुर नगर के अध्ययन की प्रासंगिकता निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से व्याख्या कर सकते हैं–

➢ जलीय पर्यावरण के महत्व का ज्ञान होगा।

➢ जलीय पर्यावरण सुरक्षा व संरक्षण के कुछ आसान व रुचिकर मार्ग प्रशस्त होंगे।

➢ जलीय पर्यावरण क्षति से हो रही बीमारियों व लक्षणों के बारे में लोगों को जागरूक किया जा सकेगा।

➢ जलीय आर्थिक विकास की प्रतिस्पर्धा में लोगों द्वारा जिस तरह से जलीय पर्यावरण क्षति किया जा रहा हैं उस पर नियंत्रण किया जा सकता हैं।

➢ जलीय पर्यावरण सुरक्षा के विषय में आम जनमानस में जागरुकता एवं जनचेतना आएगी।

➢ चमड़ा उद्योग से मृदा में हो रहे प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूकता मिलेगी।

➢ चमड़ा उद्योग से हो रहे वायु में प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूकता मिलेगी।

➢ चमड़ा उद्योग से हो रहे जल प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूकता मिलेगी।

➢ जलीय पर्यावरण सुरक्षा एवं जल संरक्षण के मानव से प्रदूषण जनित बीमारियों में कमी के बारे में लोगों में जागरूकता मिलेगी।

➢ चमड़ा उद्योग से जलीय पर्यावरण पर प्रभाव का सूक्ष्म अवलोकन कर जनमानस को जागरूक करने हेतु मार्ग प्रशस्त होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. Whittlesey, D.(1936), Major Agriculture Regions in the Earth, Annals of the Association of American Geographer.

2. Mumford, L- (1938) The Culture of Cities, New York.

3. Karan, P- P- (1964) Changes in Indian Industrial Location,

A-A-A-G, Vol-LIV

MDubey

4. Siddiqi, MF.(1967),Combination Analysis: A Review of Methodology The Geographer

5. Kumar, V-K- (1982) Kanpur City, A case study in Environmental Pollution Banaras Hindu University

6. दीक्षित,(1984), भूगोल में पर्यावरण शिक्षण, पुणे विश्वविद्यालय महाराष्ट्र

7. Singh, J (1984), Agriculture Geography, New Delhi Tata McGraw Hill

8. सिंह, आर एल.(1987), प्लानिंग, एटलस आफ उ0प्र0 प्लानिग डिपार्टमेन्ट गवर्नमेंट ऑफ उ0प्र0, लखनऊ।

9. गुप्ता, ए. अशेर, एम. जी.(1989), पर्यावरण एवं विकासशील दुनिया का सिद्धांत नीति एवं प्रवंधन।

10. सिंह, (1989), पर्यावरण भूगोल की अवधारणात्मक रूपरेखा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

11. Sidharta, J (1989) Drought in India, Spatio Temporal Variations HT- Patna

12. सिंह, डी.के. (1990), आपदा में कमी पर आंकड़े एवं विश्लेषण, कोलकाता विश्वविद्यालय

13. करन, महेश्वर प्रसाद,(1991) नगरीय भूगोल, किताब घर, कानपुर

14. मिश्र,राधेश्याम (1992), इलाहाबाद जनपद में ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन, शोध प्रबंध इलाहाबाद विश्वविद्यालय

15. सिंह, गोपाल (1996), भारत का भूगोल, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

16. Tiwari, R-K, (2001)- Human Resource Development in Jharkhand] Geographical Rev- of India] Calcutta,

17. श्रीवास्तव(2006), प्रादेशिक नियोजन और सन्तुलित विकास

18. राव एवं श्रीवस्तव(2007), मानव भूगोल, वसुंधरा प्रकाशन गोरखपुर,पेज 157दृ208

19. सिंह, सविंद्र,(2009), जैव भूगोल, प्रवालिका पॉब्लिकेशन 11/10 यूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज (इलाहाबाद)

20. तिवारी, रामचन्द्र,(2009), अधिवास भूगोल, प्रवालिका पॉब्लिकेशन 11/10 यूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज (इलाहाबाद)

21. **गौतम, अलका (2010)**, भारत का वृहद भूगोल , शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज, इलाहाबाद

22. **सिंह, सविंद्र,(2012)**, आपदा प्रबंधन , प्रवालिका पॉब्लिकेशन 11/10 यूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज (इलाहाबाद)

23. **गौतम एण्ड चौहान (2012–13)**. भारत, रस्तोगी पब्लिकेशन, गंगोत्री शिवाजी रोड मेरठ

24. **तिवारी, रामचन्द्र,(2013)**, भारत का भूगोल, प्रवालिका पॉब्लिकेशन 11/10 यूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज (इलाहाबाद), पेज 403–510

25. **सिंह, सविंद्र,(2014)**, पर्यावरण भूगोल, प्रवालिका पॉब्लिकेशन 11/10 यूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज (इलाहाबाद)

26. **गेराई, देवव्रत(2017)**, भू पर्यावरण मूल्यांकन एवं तटवर्ती क्षेत्रों का मूल्यांकन, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

27. **चान्दना. आर0सी0** 2017), जनसंख्या भूगोल

28. **सिंह, काशीनाथ और सिंह, जगदीश (2019)**, आर्थिक भूगोल के मूलतत्व, ज्ञानोदय प्रकाशन गोरखपुर

29. **मौर्या, एस. डी. (2021)**, जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

30. **मौर्या, एस. डी. (2021)**, अधिवास भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

31. **गौतम, अलका (2021)**, कृषि भूगोल, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज, इलाहाबाद

32. **पाल, राजेश कुमार (2022)**, जनपद जौनपुर (उत्तर प्रदेश) में जल संसाधन और कृषि विकास का एक भौगोलिक अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय

33. **कुमार, सिंह, संजय, अभिषेक(2023)**, तकनीकी समागम और कृषि विकास, कनक प्रकाशन

MDubey

DrillBit

DrillBit Similarity Report

6	11	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	icar.gov.in	1	Publication
2	rsaraj.org	1	Publication
3	www.slideshare.net	1	Internet Data
4	rsaraj.org	1	Publication
5	highereducation.mp.gov.in	1	Publication
6	uprtouexam.in	1	Internet Data
7	Thesis submitted to shodhganga - shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
8	allstudyjournal.com	<1	Publication
9	repo.unand.ac.id	<1	Publication
10	libopac.kannuruniversity.ac.in	<1	Internet Data
11	www.studocu.com	<1	Internet Data

MDubey.

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	Mukesh Dubey
Title	Janpad Kanpur Nagar Ke Jaliy Paryavaran Par Chamada Udyog Ke Prabhaav Ka Ek Bhaugolik Adhyayan
Paper/Submission ID	3608250
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-13 13:58:40
Total Pages, Total Words	15, 3975
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **6 %**

Sources Type

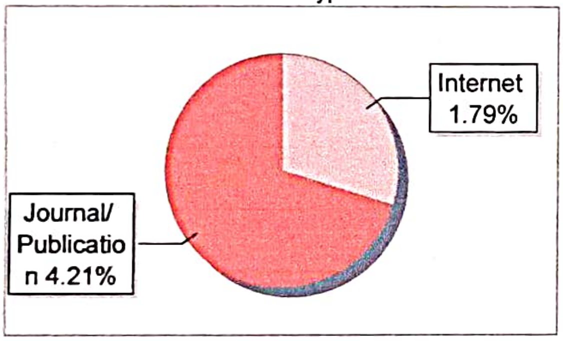

Report Content

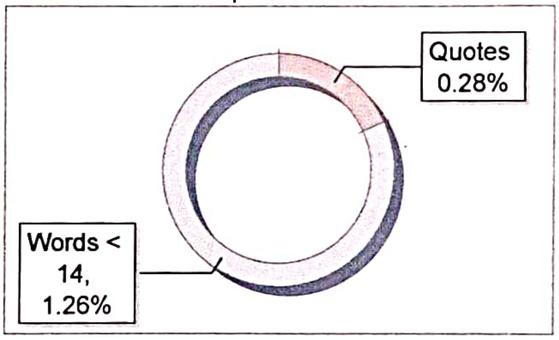

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	**0 %**
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	Non-English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File